HIM116L HINDI LANGUAGE (MIL)
1st SEMESTER (2019)

Title: हिन्दी वर्णमाला एवं व्याकरण

इकाई 1:

1) सभी वर्णों का सही उच्चारण पहचान एवं लेखन।
2) स्वरों का परिचय।
3) मात्राएं।

इकाई 2:

1) व्यंजनों का परिचय
2) संयुक्त व्यंजन, विदेशी ध्वनियां
3) पंचमाक्षर, अनुनासिक, महाप्राण-अल्पप्राण ध्वनियां

इकाई 3:

1) सभी वर्णों का उच्चारण - स्थान
2) शब्द लेखन
3) मात्राओं वाले शब्द

इकाई 4:

1) वाक्य लेखन
2) संज्ञा तथा भेद

Scanned by CamScanner

संज्ञा के विकारक तत्व -
लिंग, वचन एवं कारक।

Scanned by CamScanner

Semester: Ist. Hindi Language (MIL)

Title: हिन्दी वर्णमाला एवं व्याकरण

→ **वर्णमाला** :- किसी भाषा में प्रयुक्त होने वाले वर्णों के व्यवस्थित समूह को वर्णमाला कहते है।

वर्णमाला = (वर्णों की माला)

प्रत्येक भाषा की अपनी वर्णमाला होती है।

उदाहरण = अ, आ, इ ई ..... ।

→ **वर्ण** :- भाषा की जो सबसे छोटी इकाई ध्वनि है। उस ध्वनि को ही वर्ण कहते है। वर्ण उस मूल ध्वनि को कहते हैं, जिसके खण्ड या टुकडे नहीं किए जा सकते। हिन्दी में 52 वर्ण होते है, जिनमें 13 स्वर और 39 व्यंजन होते हैं।

→ वर्णों के भेद :

हिन्दी भाषा में वर्ण दो प्रकार के होते है।

1) स्वर

2) व्यंजन

Scanned by CamScanner

1) स्वर :-

जिन ध्वनियों के उच्चारण के समय वायु (हवा) बिना किसी रुकावट के साथ मुहँ से बाहर निकलती है, उन्हें स्वर कहा जाता है। अथवा वे वर्ण जिनके उच्चारण में किसी अन्य वर्ण की सहायता की आवश्यकता नहीं होती, स्वर कहलाते है। इसके उच्चारण में कंठ, तालु का उपयोग होता है, जीभ होंठ का नहीं।

हिन्दी वर्णमाला में 13 स्वर होते हैं, जैसे -

अ आ इ ई उ ऊ ऋ
ए ऐ ओ औ अं अः

<u>स्वर के भेद</u> :

स्वर के दो भेद होते हैं -

1) मूल स्वर

2) संयुक्त स्वर

Scanned by CamScanner

1) मूल स्वर :

अ इ उ ए

2) संयुक्त स्वर :

ऐ (अ + ए) और (अ + ओ)

मूल स्वर के 3 भेद होते हैं।

1) ह्रस्व स्वर 2) दीर्घ स्वर 3) प्लुत स्वर

① **ह्रस्व स्वर :-**

जिन स्वरों के उच्चारण में कम समय लगता है, उन्हें ह्रस्व स्वर कहते है। ह्रस्व स्वर चार होते है - अ इ उ ऋ।

② **दीर्घ स्वर :-**

जिन स्वरों के उच्चारण में ह्रस्व स्वर से दोगुना समय लगता है। वे दीर्घ स्वर कहलाते है। अथवा जिन स्वरों के उच्चारण में अधिक समय लगता है, उन्हें दीर्घ स्वर कहते है।

Scanned by CamScanner

दीर्घ स्वर सात होते है -
आ ई ऊ ए ऐ ओ औ ।
दीर्घ स्वर दो शब्दों के योग से बनते है ।

जैसे - आ = (अ + अ)
ई = (इ + इ)
ए = (अ + इ)
ऐ = (अ + ए)
ओ = (अ + उ)
औ = (अ + ओ)

③ <u>प्लुत स्वर :-</u>

वे स्वर जिनके उच्चारण में दीर्घ स्वर से भी अधिक समय अर्थात तीन मात्राओं का समय लगता है, वे स्वर प्लुत स्वर कहलाते हैं ।
इसका चिह्न (ऽ) है ।
इसका प्रयोग पुकारते समय किया जाता है ।
जैसे - सुनोऽऽ , राऽऽम ।

Scanned by CamScanner

७ वर्णों का उच्चारण, पहचान एवं लेखन।

स्वर :

अ आ इ ई उ ऊ ऋ
ए ऐ ओ औ

अनुस्वार = अं

विसर्ग = अः

व्यंजन :

	क	ख	ग	घ	ङ
	च	छ	ज	झ	ञ
	ट	ठ	ड	ढ	ण
	त	थ	द	ध	न
	प	फ	ब	भ	म
अन्तःस्थ :	य	र	ल	व	
उष्म :	श	ष	स	ह	

संयुक्त व्यंजन : क्ष त्र ज्ञ श्र

गृहित/विदेशी वर्ण : तः क़ ख़ ग़ ज़ फ़

Scanned by CamScanner

मात्राएँ :

स्वरो के जो चिह्न व्यंजनों के साथ जोड़े जाते है, वे मात्राएँ कहलाते है। स्वरों के बदले हुए स्वरूप को मात्रा कहते है। स्वरों की मात्राएँ निम्नलिखित है –

अ = × कम

आ = 'ा' काम

इ = 'ि' अधिक

ई = 'ी' खीर

उ = [ु] गुलाब

ऊ = [ू] भूल

ऋ = [ृ] कृष्ण

ए = ' े ' केश

ऐ = ' ै ' है

ओ = [ो] चोर

औ = [ौ] और

अं = [ं] अंश

अः = [:] अतः

Scanned by CamScanner

५ **व्यंजन**

वे अक्षर जिनके उच्चारण में ध्वनि से अनुस्फुटित होकर मुख विवर के उच्चारण स्थानों को स्पर्श करती हुई निकलती हैं, वे व्यंजन कहलाते है। प्रत्येक व्यंजन का उच्चारण। स्वर की सहायता से होता है।

जैसे - ① क् + अ = क

② ख् + अ = ख....

③ ग् + अ = ग....

व्यंजन 33 होते हैं।

कवर्ग = क ख ग घ ङ

चवर्ग = च छ ज झ ञ

टवर्ग = ट ठ ड ढ ण

तवर्ग = त थ द ध न

पवर्ग = प फ ब भ म

अन्तस्थ = य र ल व

ऊष्म = श ष स ह

Scanned by CamScanner

हिन्दी मे तीन संयुक्ताक्षर (क्ष, त्र, ज्ञ) का भी प्रयोग होता है।

जैसे = क्ष = क् + ष

त्र = त् + र

ज्ञ = ज् + ञ

- व्यंजनों का वर्गीकरण -

① **उच्चारण स्थान के आधार पर :-**

1 ओष्ठ्य
2) दन्त्य
3) दन्तोष्ठ्य
4) वर्त्स्य
5) तालव्य
6) पूर्व तालव्य
7) कोमल तालव्य
8) स्वतंत्रीय

Scanned by CamScanner

1) ओष्ठ्य - जिन व्यंजनों का उच्चारण दोनों ओष्ठों (होठों) से उच्चारित होता है। जीभ की सहायता नहीं ली जाती है।

जैसे - प फ ब भ म।

2) <u>दन्त्य</u> :- जब जीभ की नोक ऊपर वाली दंत पंक्ति को स्पर्श करती है।

जैसे - त थ द ध

3) दन्तोष्ठ्य - इसके उच्चारण में दन्त और ओष्ठ के क्षणिक संपर्क से हवा बाहर निकल आती है।

जैसे - व

4) वर्त्स्य - जब जीभ मसूड़ों का स्पर्श करती है। र ल स ज न

5) तालव्य - जब जिह्वा तालु से स्पर्श करती है

जैसे - च छ ज झ श, य

6) कंठ्य -

कोमल तालव्य - जब जीभ तालु के सबसे पिछले भाग को छूती है। जैसे -

Scanned by CamScanner

क ख ग घ ङ

* स्वर यंत्र - Larynx

8) स्वर यंत्रीय :-
गले के अंदर स्वर यंत्र के मुख से उच्चारित होने वाली ध्वनि
जैसे - ह ।

② स्वास के आधार पर :-

↓
अल्पप्राण | महाप्राण

i अल्पप्राण - जिन व्यंजनों के उच्चारण मे हवा की मात्रा कम निकले ।

उदाहरण =
क, ग, ङ.
च, ज, ञ ....
* (प्रत्येक वर्ग का पहला, तीसरा और पाँचवा व्यंजन)

II महाप्राण - जब हवा की मात्रा अपेक्षाकृत अधिक निकले ।
जैसे -
ख, घ
छ, झ ... *(प्रत्येक वर्ग का दूसरा और चौथा व्यंजन)

Scanned by CamScanner

③ स्वर - तंत्रियों के कंपन के आधार पर :

सघोष — अघोष

(i) सघोष :

जिन ध्वनियों के उच्चारण में स्वर यंत्र में स्वर-तंत्रियों से हवा टकराती हुई बाहर आती है, उन्हें सघोष ध्वनियाँ कहते है।

ग घ ङ

ज झ ञ

II अघोष :-

जिन ध्वनियों के उच्चारण में स्वर यंत्र में कंपन नहीं होती है, उन्हे अघोष कहते है।

जैसे -

क, ख

च, छ .... ।

Scanned by CamScanner

3. **संयुक्त व्यंजन :** वैसे तो जहाँ भी दो अथवा दो से अधिक व्यंजन मिल जाते हैं वे संयुक्त व्यंजन कहलाते हैं, किन्तु देवनागरी लिपि में संयोग के बाद रूप-परिवर्तन हो जाने के कारण इन 3 को गिनाया गया है। ये दो-दो व्यंजनों से मिलकर बने हैं।

जैसे =

1) क्ष = क् + ष

उदाहरण = अक्षर , नक्षत्र

2) त्र = त् + र

उदाहरण = मित्र , त्रिलोक

3) ज्ञ = ज् + ञ

उदाहरण = ज्ञान , विज्ञान

New 4) श्र = श् + र् + अ

4. **विदेशी ध्वनियाँ :**

हिन्दी में अरबी - फारसी की ध्वनियों को अपनाने की चेष्टा की

Scanned by CamScanner

गई है। व्यंजनो के नीचे बिन्दु लगाकर इन नयी ध्वनियो को बनाया गया है। इन ध्वनियो को विदेशी ध्वनियाँ कहा जाता है।

जैसे - क़मल, ख़ैर, ज़रूरत
(क़ ख़ ग़ ज़ फ़) विदेशी ध्वनियाँ कहलाती है।

↳ पंचमाक्षर :→

वर्णमाला में किसी वर्ग का पाँचवाँ व्यंजन पंचमाक्षर कहलाता है।
अथवा
व्यंजनों के पाँच वर्गों (कवर्ग, चवर्ग, टवर्ग तवर्ग पवर्ग) में पाँचवे स्थान वाले वर्ण (ङ, ञ ण न म) ↳ पंचमाक्षर कहलाते है। यह पाँच वर्ण नासिक्य है, जिनका उच्चारण 'म' की तरह नाक के प्रयोग से होता है। इनका प्रयोग अनुस्वार के रूप में भी होता है।

उदाहरण =
ङ = गंगा / गङ्गा
ण = झण्डा / झंडा
ञ = चञ्चल / चंचल
न = मन्द / मंद
म = सम्बल / संबल

Scanned by CamScanner

Dated: / /20
Page No.:

5. अनुनासिक :

अनुनासिक स्वरों के उच्चारण में मुँह से अधिक तथा नाक से बहुत कम साँस निकलती है। इन स्वरों पर चन्द्रबिन्दु (ँ) का प्रयोग होता है, जो कि शिरोरेखा के ऊपर लगता है। अनुनासिक स्वर होता है।

जैसे आँख, माँ, गाँव आदि

जब शिरोरेखा के ऊपर स्वर की मात्रा लगी हो तब सुविधा के लिए चन्द्रबिन्दु (ँ) के स्थान पर बिंदु (ं) का प्रयोग करते है।

जैसे :- मैं, बिंदु आदि।

Scanned by CamScanner

इकाई 3

Dated: / /20
Page No.:

सभी वर्णों का उच्चारण स्थान:

किसी भी वर्ण का उच्चारण मुख द्वारा होता है। जीह्वा (जीभ) मुख के जिस भाग को स्पर्श (touch) करती है, उन्हीं स्थानों को वर्णों का उच्चारण स्थान कहते है।

उच्चारण स्थान तालिका:

क्रम	श्रेणी	उच्चारण	वर्ण
1)	कंठस्थ	कंठ और जीभ का निचला भाग	अ आ क् ख् ग् घ् ङ् ह्
2)	तालव्य	तालु और जीभ	इ ई, च् छ् ज् झ् ञ य् श्
3)	मूर्धन्य	मूर्धा भाग जीभ	ऋ ट् ठ् ड् ढ् ण् र् ष्
4)	दंत्य	दाँत और जीभ	त् थ् द् ध् न् ल् स्

Scanned by CamScanner

5)	ओष्ठ्य	दोनो होंठो	उ ऊ प् फ् ब् भ् म्
6)	कंठतालव्य	कंठ तालु और जीभ	ए ऐ
7)	कंठोष्ठ्य	कंठ जीभ और होंठ	ओ औ
8)	दंतोष्ठ्य	दाँत और जीभ और होंठ	व्

शब्द लेखन :

एक या एक से अधिक वर्णों से बनी हुई स्वतंत्र सार्थक ध्वनि शब्द कहलाता है।

जैसे :

एक वर्ण से निर्मित शब्द - 'न' (नहीं) 'व' (और)

अनेक वर्णों से निर्मित शब्द शेर, कमल, नयन आदि।

शब्द के भेद :

1) व्युत्पत्ति के आधार पर शब्द - भेद

① रूढ़ ② यौगिक ③ योगरूढ़

i रूढ़ :-

जो शब्द किन्हीं अन्य शब्दों के योग से न बने हो और किसी विशेष अर्थ को प्रकट करते हो तथा जिनके टुकड़ों का कोई अर्थ नहीं होता, वे रूढ़ कहलाते है।

जैसे : कल, पर।

इनमें क, ल, प, र का टुकड़े करने पर कुछ अर्थ नहीं है।

Scanned by CamScanner

ii) **यौगिक** :
जो शब्द कई सार्थक शब्दों के मेल से बने हों, वे यौगिक कहलाते हैं।
जैसे - देवालय = देव + आलय
राजपुरुष = राज + पुरुष
हिमालय = हिम + आलय.

(iii) **योगरूढ़** :

वे शब्द, जो यौगिक तो हैं, किन्तु सामान्य अर्थ को न प्रकट कर किसी विशेष अर्थ को प्रकट करते हैं, योगरूढ़ कहलाते हैं।
जैसे: पंकज, दशानन आदि

पंकज = पंक + ज (कीचड़ में उत्पन्न होने वाला) सामान्य अर्थ में प्रचलित न होकर कमल के अर्थ में रूढ़ हो गया है।

② **उत्पत्ति के आधार पर शब्द-भेद**

① तत्सम ② तद्भव ③ देशज ④ विदेशी

(i) **तत्सम**:

जो शब्द संस्कृत भाषा से हिन्दी में बिना किसी परिवर्तन के ले लिए गए है वे तत्सम कहलाते है।
जैसे: अग्नि, क्षेत्र, वायु, सूर्य, रात्रि आदि।

(ii) **तद्भव** :

जो शब्द रूप बदलने के बाद संस्कृत से हिन्दी में आए है वे तद्भव कहलाते है।
जैसे: आग (अग्नि), रात (रात्रि) सूरज (सूर्य) आदि।

(iii) **देशज** :

जो शब्द क्षेत्रीय प्रभाव के कारण परिस्थिति व आवश्यकतानुसार बनकर प्रचलित हो गए है वे देशज कहलाते है।
जैसे - पगड़ी, गाड़ी, थैला आदि।

Scanned by CamScanner

(iv) विदेशी या विदेशज :

विदेशी जातियों के संपर्क से उनकी भाषा के बहुत से शब्द हिन्दी में प्रयुक्त होने लगे हैं। ऐसे शब्द विदेशी अथवा विदेशज कहलाते है। जैसे - स्कूल, पुलिस, टेलीफोन।

अंग्रेज़ी = कॉलेज, रेडियो, डॉक्टर।

फ़ारसी = चश्मा, बीमार, आदमी।

अरबी = औलाद, कलम, औरत।

तुर्की = तोप, लाश, चाकू।

③ प्रयोग के आधार पर शब्द-भेद :

प्रयोग के आधार पर शब्द के दो भेद होते है

1) विकारी शब्द
2) अविकारी शब्द

1) जिन शब्दों का रूप परिवर्तन

Scanned by CamScanner

Dated : / /20
Page No.:

होता रहता है वे विकारी शब्द कहलाते है।
जैसे - कुत्ता, कुत्ते, कुत्तो।

विकारी शब्द के 4 भेद है -
- संज्ञा
- सर्वनाम
- विशेषण
- क्रिया

(2) जिन शब्दों के रूप में कभी कोई परिवर्तन नहीं होता है वे अविकारी शब्द कहलाते है
जैसे यहाँ, किन्तु, हे आदि।
अविकारी शब्द के चार भेद है -

- क्रिया विशेषण
- संबंधबोधक
- समुच्चयबोधक
- विस्मयादिबोधक

Scanned by CamScanner

मात्राओं वाले शब्द

अ = कम, जब, तब, मत, कमल,
जलज, अनल, गगन, अमर।

आ (ा) = पावक, भाग, कगार, पावन,
यातना, पाखण, आत्मा, नागर।

इ (ि) = भूमि, चन्द्रिका, पिता, दिन,
निराशा, दिवस, पवित्र, विद्यालय।

ई (ी) = पीयूष, नदी, पीड़ा, पृथ्वी,
धरती, नीला, जननी, रमणीक।

उ (ु) = सुधा, सुरेन्द्र, सुरेश, गुस्सा,
दुबला, वायु, बहुत, हनुमान।

ऊ (ू) = पूंजी, फूट, पीयूष, भूमि,
सूरज, समूह, लहू (खून), रूप।

ऋ (ृ) = कृष्णा, वृक्ष, सृष्टि, दृष्टि
दृश्य, श्रृंगार, संस्कृत, कृति।

Scanned by CamScanner

ए = (े) = केवल, लेखक, अपने,
सुरेश, देव, खेल, प्रेम।

ऐ = (ै) = कैसे, जैसे, फैलना, है,
शैली, मैथली, मैं, हैरान।

ओ = (ो) = मोहन, मनोहर, भोजन,
रोग, कोमल, कठोर, योग।

औ (ौ) = तौल, नौ, चौधरी, कौमुदी,
गौरी, लौकिक, परलौकिक

अं (ं) = अंग, शंकर, अंग्रेज़,
अंत, एकांकी, शंका, वहां, गांव।

अः (:) = अतः, छः मूलतः, दुःख,
प्रातः, शब्दशः, यशः, अन्तः।

Scanned by CamScanner

इकाई 4

वाक्य लेखन:-

दो या दो से अधिक शब्दों के सार्थक समूह को वाक्य कहते हैं। उदाहरण के लिए "सत्य की विजय होती है।" एक वाक्य है क्योंकि इसका पूरा - पूरा अर्थ निकलता है।

वाक्य के भेद:

वाक्य भेद दो प्रकार से किए जा सकते हैं -

1) अर्थ के आधार पर वाक्य भेद
2) रचना के आधार पर वाक्य भेद

1 अर्थ के आधार पर आठ प्रकार के वाक्य होते हैं -

(i) विधानवाचक सूचक वाक्य :-
वह वाक्य जिससे किसी प्रकार की जानकारी प्राप्त होती है, वह विधानवाचक वाक्य कहलाता है।
उदाहरण :
राम के पिता का नाम दशरथ था।
दशरथ अयोध्या के राजा थे।

Scanned by CamScanner

(ii) निषेधवाचक वाक्य :- कार्य न होने का जिन वाक्यों से भाव प्रकट होता है, उन्हें निषेध-वाचक वाक्य कहते हैं।
जैसे-
मैंने दूध नहीं पीया।
मैंने खाना नहीं खाया।

(iii) प्रश्नवाचक वाक्य :-
वह वाक्य जिसके द्वारा किसी प्रकार का प्रश्न किया जाता है, वह प्रश्नवाचक वाक्य कहलाता है।
उदाहरण -
आप किस कक्षा में पढ़ते हैं?
क्या आपने खाना खाया?

(iv) आज्ञावाचक वाक्य :-
वह वाक्य जिसके द्वारा किसी प्रकार की आज्ञा दी जाती है या प्रार्थना किया जाता है, वह आज्ञा-वाचक वाक्य कहलाता है।
उदाहरण -
कृपया शांति बनाए रखें।
बैठो।

Scanned by CamScanner

(V) विस्मयादिबोधक वाक्य :-
वह वाक्य जिससे किसी प्रकार की गहरी अनुभूति का प्रदर्शन किया जाता है, वह विस्मयादिबोधक वाक्य कहलाता है।
उदाहरण :
अहा! कितना सुन्दर फूल है।
ओह! कितनी ठंडी रात है।

(Vi) इच्छावाचक वाक्य :-
जिन वाक्यों में किसी इच्छा, आकांक्षा या आशीर्वाद का बोध होता है, उन्हें इच्छावाचक वाक्य कहते हैं।
उदाहरण - ईश्वर तुम्हें प्रसन्न रखें।

(vii) संकेतवाचक वाक्य :-
जिन वाक्यों में किसी संकेत का बोध होता है, उन्हें संकेतवाचक वाक्य कहते हैं।
उदाहरण :
सोनु उधर रहता है।

(viii) संदेहवाचक वाक्य :-
जिन वाक्यों में संदेह का बोध होता है, उन्हें संदेहवाचक वाक्य

Scanned by CamScanner

Dated: / /20
Page No.:

कहते हैं।
उदाहरण : क्या उसने काम कर लिया ?
क्या वो यहाँ आया ?

② रचना के आधार पर वाक्य के भेद :-

रचना के आधार पर वाक्य के तीन भेद है

1) सरल वाक्य :- सरल वाक्य में एक ही विधेय होता है। इन वाक्यों मे एक ही क्रिया होती है।
जैसे - राकेश ने भोजन किया।

2) संयुक्त वाक्य :- जिन वाक्यों मे दो या दो से अधिक सरल वाक्य समुच्चयबोधक अव्ययों से जुड़े हो, उन्हे संयुक्त वाक्य कहते है।
जैसे - वह सुबह गया और शाम को लौट आया।

3) मिश्रित वाक्य :- जिन वाक्यों में

Scanned by CamScanner

Page No.:

एक मुख्य या प्रधान वाक्य हो, और अन्य आश्रित उपवाक्य हो, उन्हें मिश्रित वाक्य कहते है।
जैसे -

ज्यों ही उसने दवा पी, वह सो गया।

यदि परिश्रम करोगे, तो उत्तीर्ण हो जाओगे।

Scanned by CamScanner

Dated: / /20
Page No.:

संज्ञा तथा भेद

किसी जाति, भाव, व्यक्ति, स्थान और क्रिया आदि के नाम को 'संज्ञा' कहते है।
जैसे पशु (जाति)
सुन्दरता (गुण)
व्यथा (भाव)
मोहन (व्यक्ति)
दिल्ली (स्थान)
मारना (क्रिया)

संज्ञा के मुख्यत: तीन भेद है -
1) जातिवाचक संज्ञा
2) व्यक्तिवाचक संज्ञा
3) भाववाचक संज्ञा।

• **जातिवाचक संज्ञा :-** जिस संज्ञा शब्द से किसी व्यक्ति वस्तु, स्थान की संपुर्ण जाति का बोध हो उसे जातिवाचक संज्ञा कहते है।
जैसे - मनुष्य, नदी, पर्वत, पशु गाँव, शहर आदि।

• **भाववाचक संज्ञा :-** जिस संज्ञा शब्द से पदार्थों की

Scanned by CamScanner

अवस्था, गुण दोष, धर्म आदि का बोध हो उसे भाववाचक संज्ञा कहते है।
जैसे - बुढ़ापा, मिठास, बचपन मोटापा आदि

• व्यक्तिवाचक संज्ञा :-
किसी भी विशेष व्यक्ति, वस्तु या स्थान के नाम का बोध कराने वाले संज्ञा को व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते है। अर्थात व्यक्तिवाचक संज्ञा सभी व्यक्ति, वस्तु या स्थान की संपूर्ण जाति में से खास का नाम बताती है।
जैसे -
व्यक्ति - महात्मा गाँधी
वस्तु - कुरान
स्थान - दिल्ली।

कुछ विद्वान अंग्रेज़ी व्याकरण के प्रभाव के कारण संज्ञा शब्द के दो भेद और बतलाते है -
(i) समुदायवाचक संज्ञा
(ii) द्रव्यवाचक संज्ञा

समुदायवाचक संज्ञा :-
जिन संज्ञा शब्दों से व्यक्तियों वस्तुओं आदि के समूह का

Scanned by CamScanner

Dated: / /20
Page No.:

बोध हो उन्हें समुदायवाचक संज्ञा कहते हैं।
जैसे - सभा, कक्षा, सेना आदि।

द्रव्यवाचक संज्ञा
जिन संज्ञा-शब्दों से किसी धातु द्रव्य आदि पदार्थों का बोध हो उन्हें द्रव्यवाचक संज्ञा कहते हैं।
जैसे - घी, तेल, सोना, चाँदी, लोहा आदि।

Scanned by CamScanner

Dated : / /20
Page No.:

लिंग :-

लिंग संस्कृत का शब्द होता है जिसका अर्थ होता है निशान। जिस संज्ञा शब्द से व्यक्ति की जाति का पता चलता है उसे लिंग कहते हैं। इससे पता चलता है कि पुरुष जाति का है या स्त्री जाति का है। हिन्दी में दो लिंग होते है (पुल्लिंग तथा स्त्रीलिंग) जबकि संस्कृत में तीन लिंग होते है - पुल्लिंग, स्त्रीलिंग तथा नपुंसक लिंग।

उदाहरण
- मोहन पढ़ता है। 'पढ़ता' का रूप पुल्लिंग है
- गीता गाती है। यहाँ 'गीता' का रूप स्त्रीलिंग है।

- **लिंग के भेद :** संसार में तीन जातियां है - पुरुष, स्त्री, जड़। इन्हीं के आधार पर लिंग के तीन भेद बनाए गए है।

Scanned by CamScanner

Dated : / /20
Page No.:

1) पुल्लिंग
2) स्त्रीलिंग
3) नपुंसकलिंग

① पुल्लिंग :-

जिस संज्ञा के शब्द से पुरुष जाति का पता चलता है उसे पुल्लिंग कहते है।
जैसे - पिता, राजा, घोड़ा, कुत्ता लगाव, प्रेम, नाटक आदि

⇒ पुल्लिंग की पहचान :

1. जिन शब्दों के पीछे अ, आव, पा, पन, न आदि प्रत्यय आए वे पुल्लिंग होते हैं।
जैसे - मन, वन, राम, मोटापा, चढ़ाव, बचपन आदि

2. पर्वतों के नाम पुल्लिंग होते हैं।
जैसे -
हिमालय, एवरेस्ट, कैलाश आदि

3. दिनों के नाम पुल्लिंग होते हैं
जैसे - सोमवार, मंगलवार ..... आदि

Scanned by CamScanner

Dated : / /20
Page No.:

4. देशों के नाम पुल्लिंग होते है।
जैसे - भारत, पाकिस्तान, चीन आदि।

5. महीनो के नाम पुल्लिंग होते है - फरवरी, मार्च आदि।

② स्त्रीलिंग :-

जिन संज्ञा शब्दों से स्त्री जाति का पता चलता है उसे स्त्रीलिंग कहते है।
जैसे - लडकी, बकरी, माता, लज्जा, नदी, बहन आदि।

स्त्रीलिंग की पहचान :

1) जिन शब्दो के पीछे ई, इन, नी, आनी आदि प्रत्यय आए वे स्त्रीलिंग होते है।

जैसे - बुडी, भली, योगिनी, धोबिन, मोरनी, ठकुराइन आदि।

2) भाषा, बोलियों तथा लिपियों के नाम स्त्रीलिंग होती है :-
जैसे - हिन्दी, संस्कृत, देवनागरी,

Scanned by CamScanner

अंग्रेज़ी , बंगाली आदि

3) नदियों के नाम स्त्रीलिंग होते हैं -
जैसे - गंगा , यमुना , सरस्वती
कावेरी आदि ।

4) तारीखों तथा तिथियों के नाम स्त्रीलिंग होते हैं -
जैसे - पहली , दूसरी , पूर्णिमा ,
अमावस्या ।

5) पुस्तकों के नाम स्त्रीलिंग होते हैं -
जैसे - रामायण , महाभारत , गीता
आदि ।

extra

③ नपुंसकलिंग :- संस्कृत व्याकरण में तीन प्रकार के लिंगों में से एक जिसमें ऐसे पदार्थों का अंतर्भाव होता है जो न तो पुल्लिंग हो और न स्त्रीलिंग । अंग्रेज़ी व्याकरण में ऐसी स्थिति को न्यूटर जेंडर के अंतर्गत रखा जाता है ।

Scanned by CamScanner

Dated : / /20

Page No.:

वचन (Number)

शब्द के जिस रूप से एक या एक से अधिक का बोध होता है, उसे हिन्दी व्याकरण में 'वचन' कहते है। अथवा

संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया के जिस रूप से संख्या का बोध हो, उसे 'वचन' कहते है।

जैसे - फ्रिज में सब्ज़ियाँ रखी हैं।
तालाब में मछलियाँ तैर रही हैं।
एक वचन बहुवचन

वचन के प्रकार :

वचन दो प्रकार का होता है -

1) एकवचन
2) बहुवचन

1) एकवचन : संज्ञा के जिस रूप से एक व्यक्ति या एक वस्तु होने का ज्ञान हो, उसे एकवचन कहते है।

जैसे - स्त्री, लड़का, नदी, मोर आदि।

Scanned by CamScanner

2) बहुवचन : शब्द के जिस रूप से अधिक व्यक्ति या वस्तु होने का ज्ञान हो, उसे बहुवचन कहते है।
जैसे - घोड़े, नदियाँ, स्त्रियाँ, टोपियाँ।

एकवचन से बहुवचन बनाने के कुछ नियम -

1) आकारान्त पुल्लिंग शब्द में 'आ' के स्थान पर 'ए' लगाने से।

एकवचन	बहुवचन
जूता	जूते
तारा	तारे
लड़का	लड़के

2) आकारांत स्त्रीलिंग शब्द मे 'अ' के स्थान पर 'ए' लगाने से -

कलम - कलमें
बात - बातें
पुस्तक - पुस्तकें

3) जिन स्त्रीलिंग संज्ञाओं के अन्त मे 'या' आता है, उनमे चन्द्रबिन्दु

Scanned by CamScanner

Dated : / /20
Page No.:

लगाने से बहुवचन बनता है -
जैसे -
चिड़िया - चिड़ियाँ
गुड़िया - गुड़ियाँ

4) कुछ शब्दों में 'गण', 'वर्ग', 'जन', 'लोग', 'दल' आदि शब्द जोड़कर भी शब्द का बहुवचन बना देते है। जैसे -
पाठक = पाठकगण
मित्र = मित्रवर्ग
गुरु = गुरुजन

5) इकरांत शब्दों में 'याँ' लगाया जाता है -
जैसे - जाति = जातियाँ
रीति = रीतियाँ
लड़की = लड़कियाँ।

Scanned by CamScanner

Dated: / /20
Page No.:

⇒ कारक :

वाक्य में प्रयोग होने वाले किसी संज्ञा अथवा सर्वनाम शब्द का क्रिया के साथ सम्बन्ध को कारक कहते हैं।

उदाहरण : कृष्णा ने खाना खाया।
बिल्ली छत से कूदी।

कारक के भेद :

कारक 8 प्रकार के होते हैं कारक को विभक्ति से भी पहचाना जा सकता है :

क्रम	विभक्ति	कारक	चिन्ह
1	प्रथम	कर्ता	ने
2	द्वितीय	कर्म	को
3	तृतीय	करण	के द्वारा (से)
4	चतुर्थी	सम्प्रदान	के लिए
5	पंचमी	अपादान	से (अलग होने के लिए)
6	षष्ठी	सम्बन्ध	का, की, रा, के ....
7	सप्तमी	अधिकरण	में पर
8	अष्टमी	संबोधन	हे, अरे

उदाहरण

1) कर्त्ता कारक = बच्चे ने दूध पीया।

Scanned by CamScanner

Dated : / /20
Page No.:

2) कर्म कारक = • राम ने रावन को मार दिया ।

3) करण कारक = • राम ने धनुष के द्वारा रावण को मारा।
• माँ ने बच्चे को चम्मच से खाना खिलाया।

4) सम्प्रदान कारक = • राम सीता के लिए लंका गए ।

5) अपादान कारक = • वह नदी से पानी ला रहा था।

6) सम्बन्ध कारक = • नदियों का जल स्वच्छ होता है ।
• रीया की बहन बहुत अच्छी है।

7) अधिकरण कारक = • तुम्हारे घर में कौन लोग हैं ।

8) संबोधन कारक = • हे ईश्वर! हमें बचाओ .

Scanned by CamScanner